संप्रभुता (Sovereignty)

संप्रभुता 'सावरेंटी' का हिन्दी रुपान्तरण है जिसकी उत्पत्ति लैटिन शब्द के 'सुपरेनस' से हुई है, जिसका अर्थ सुप्रीम या सर्वोच्च होता है।

विद्वानों ने संप्रभुता की कई प्रकार की परिभाषाएं बतलाई हैं। बोंदा के अनुसार "संप्रभुता कानून के क्षेत्र से परे नागरिकों और प्रजाजनों पर सर्वोच्च शक्ति है।" बर्गेस के अनुसार "सब व्यक्तियों और व्यक्तियों के संघों पर मौलिक, सर्वोच्चकारी और अमर्यादित शक्ति का नाम ही संप्रभुता है।"

सम्प्रभुता के दो स्वरुप है आंतरिक और वाह्य। आंतरिक संप्रभुता उसे कहते हैं जहां राज्य के अन्तर्गत सब व्यक्तियों अथवा व्यक्तियों के संघों पर इसका एक छत्र राज्य हो। वाह्य संप्रभुता से तात्पर्य है राज्य अन्य राज्यों के किसी भी प्रकार के दबाव या हस्तक्षेप से स्वतंत्र हो।

संप्रभुता के प्रकार-

1- नाममात्र की संप्रभुता - नाममात्र की संप्रभुता से हमारा तात्पर्य केवल नाम की संप्रभुता से है। यह उस राजा की सर्वोच्च शक्ति की ओर संकेत करती है जिसने वास्तविक शक्ति का प्रयोग छोड़ दिया है।

2- वैधानिक संप्रभुता - इसका उस व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह से संबंध है, जिन्हें कानून द्वारा अंतिम आदेश जारी करने का अधिकार है।

3- राजनीतिक संप्रभुता - डायसी के अनुसार "संप्रभु शक्ति की पृष्ठभूमि में जिसे वकील मान्यता प्रदान करता है, एक अन्य प्रभु शक्ति है जिसके आगे वैध संप्रभु को झुकना पड़ता है।"

4- लोक संप्रभुता - इसका तात्पर्य जन संप्रभुता से है अर्थात संप्रभुता जनता में निहित होती है और प्रत्येक कार्य जनता के अनुसार चलाया जाता है।

Scanned by TapScanner

आस्टिन का संप्रभुता सिद्धान्त

जॉन आस्टिन ने संप्रभुता के कानूनी सिद्धान्त की स्पष्ट व्याख्या की है। वह संप्रभुता की व्याख्या अपनी पुस्तक 'लेक्चर्स ऑन जूरिसप्रूडेंस' (Lectures on Jurisprudence) में किया है। वह कहता है कि - " यदि कोई निश्चित श्रेष्ठ व्यक्ति जो ऐसे ही किसी अन्य श्रेष्ठ व्यक्ति की आज्ञा पालन करने का आदी नहीं है। समाज के बहुत बड़े भाग से अपनी आज्ञा का पालन सहज रूप से करा लेता है तो वह निश्चित श्रेष्ठ व्यक्ति प्रभुसत्ताधारी है और वह समाज राजनीतिक और स्वतंत्र है। कानून प्रभुसत्ताधारी का आदेश जो एक उच्च व्यक्ति द्वारा निम्न व्यक्ति को दिया जाता है। प्रत्येक कानून का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष निर्माता प्रभुसत्ता धारी है।

1- प्रभुसत्ता के दृष्टिकोण से समाज में एक निश्चित श्रेष्ठ व्यक्ति का होना अनिवार्य है। प्रभुसत्ताधारी निश्चित और जीता जागता इंसान होना चाहिए ताकि लोग उसकी सर्वोच्च शक्ति को पहचान सके।

2- यह श्रेष्ठ व्यक्ति किसी दूसरे श्रेष्ठ व्यक्ति के अधीन नहीं होना चाहिए। अर्थात समुदाय की सर्वोच्च शक्ति ऐसी स्थिति में नहीं होनी चाहिए कि उसे किसी अन्य शक्ति की आज्ञाओं का पालन करना पड़े।

3- इस श्रेष्ठ व्यक्ति को समाज के बहुत बड़े भाग की आज्ञाकारिता प्राप्त होनी चाहिए अर्थात समाज का एक बड़ा भाग स्वभाव रूप से प्रभुसत्ताधारी की आज्ञाओं का पालन करता हो। आज्ञापालन निरंतर, नियमित, स्थायी और स्वभावबश होना चाहिए।

4- प्रभुसत्ताधारी का आदेश कानून है और जो आदेश उसके द्वारा नहीं दिया गया अथवा जिसकी अनुमति नहीं दी गई, वह कानून नहीं है।

5- प्रभुसत्ता असीमित है और वह किसी भी प्रकार के अवरोध सहन नहीं कर सकती।

6- संप्रभुता अविभाज्य भी है अर्थात इसे कोई बांट नहीं सकता, यह सर्वोच्च, अदेय, सर्वव्याप्त तथा एकान्तिक शक्ति है।

Scanned by TapScanner

संप्रभुता का बहुलवादी सिद्धान्त - (Pluralism)

संप्रभुता का बहुलवादी सिद्धान्त एकलवादी संप्रभुता के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया है। बहुलवादियों के अनुसार संप्रभुत एक व्यक्ति या संस्था में निवास नहीं करता अपितु कई व्यक्तियों एवं कई संस्थाओं में निवास करता है। क्यों कि राज्य संघों का संघ है। इस सिद्धान्त के समर्थक गियर्के, मेटलैण्ड, मैकाइवर, लिंडसे, बार्कर, G.D.H. कोल, मिस फॉलेट इत्यादि हैं। बहुलवादी संप्रभु को सर्वोच्च नहीं मानते। इनके विचारों को निम्नलिखित रूप से देखा जा सकता है -

1- राज्य के भाग उतने ही यथार्थ हैं जितना कि वह स्वयं। अतः राज्य विभागशील है सामूहिक नहीं।

2- राज्य और सरकार में अंतर वास्तविक नहीं है। दोनों एक हैं। राज्य आज्ञा नहीं देता, वह तो सेवा करता है. फलतः वह जनसेवा संगठन है।

3- अन्य समूहों में से राज्य भी एक समूह है जिसकी आवश्यकता मनुष्य को है जो अपने जीवन के उद्देश्य की पूर्ति करना चाहता है।

4- सर्वशक्तिमान संप्रभुता तथ्यों के आधार पर सत्य नहीं उतरती। यह इकाई नहीं है संघात्मक है।

5- राज्य केवल सद्भावना से ही काम चला सकता है। अपने अंदर विद्यमान कुछ समूहों के विरोध के विरुद्ध यह अपनी इच्छा को क्रियान्वित नहीं कर सकता।

संप्रभुता की विशेषताएं -

1- स्थायित्व (अखण्डनीय)
2- अविभाज्य
3- सर्वव्यापी
4- निरंकुश
5- अदेय

G. P. Rathaur

Scanned by TapScanner